फोटो -जय स्टूडियो

स्व. दत्तात्रय पुसतकर शिक्षण संस्था द्वारा 'विधानसभा चुनाव परिणाम : नए महाराष्ट्र की खोज' पर व्याख्यान का आयोजन

नियोजन, लक्ष्य, प्रभाव व धनशक्ति ही महायुति की जीत का रहस्य

पत्रकार लेखक सुनील तांबे ने कहा

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अमरावती, 22 दिसंबर - राज्य के विधानसभा चुनाव में महाविकास आघाड़ी व महायुति के बीच लड़ाई हुई, यह कहना अनुचित नहीं होगा, किंतु महायुति ने नियोजन के साथ लक्ष्य, प्रभाव व धनशक्ति के बल पर इस चुनाव में जीत हासिल की है. महाविकास आघाड़ी के पास धुरंधर व अनुभवी नेता होने के बाद भी वह अपना कौशल दिखाना नहीं चाहती, इस बात से मतदाता परिचित हुए हैं. जिसके कारण इस बार के चुनाव में महायुति को बल मिला है, ऐसा प्रतिपादन पत्रकार व लेखक तथा 'राइटर्स' इस विश्वस्तरीय वृत्त संस्था के मार्केट लाइट सेवा के पूर्व संपादक मुंबई निवासी सुनील तांबे ने कही.

स्थानीय हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल के स्व. सोमेश्वर पुसतकर सभागृह में रविवार की शाम स्व. दत्तात्रय पुसतकर शिक्षण संस्था व व्याख्यानमाला समन्वयक अविनाश दूधे के संयुक्त तत्वावधान में सोमेश्वर पुसतकर स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर वे बोल रहे थे. कार्यक्रम में स्व. दत्तात्रय पुसतकर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विजय दरणे, सचिव श्रीकृष्ण बालापुरे, व्याख्यानमाला समन्वयक अविनाश दुधे आदि प्रमुखता से उपस्थित थे.

सुनील तांबे ने कहा कि, किसी भी चुनाव का परिणाम आश्चर्यजनक होता है. विधानसभा चुनाव में भी ऐसा ही देखने को मिला. जहां लोकसभा चुनाव में 48 में से 31 लोकसभा सीटों पर महाविकास आघाड़ी को जीत हासिल हुई, लेकिन विधानसभा चुनाव में ऐसा क्या हुआ जो महाविकास आघाड़ी कोई चमत्कार दिखा नहीं पाई, यह चिंतन का विषय बना है. वोटों की बात करें तो आघाड़ी व युति में केवल 1 फीसदी का अंतर था. इसका अर्थ है कि, एकनाथ शिंदे व अजीत पवार को लोग गद्दार नहीं समझते. इस चुनाव में महायुति को 233 व आघाड़ी को 50 सीट प्राप्त हुई. महायुति को आघाड़ी से 14 फीसदी अधिक वोट मिले. केवल 6 माह के प्रयासों से उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की. विदर्भ, मराठवाड़ा, खानदेश पश्चिम महाराष्ट्र, मुम्बई-ठाणे, कोकण जैसे प्रदेश में राज्य बसा है. पहले पश्चिम महाराष्ट्र में कांग्रेस-राकांपा का वर्चस्व था. विदर्भ में भाजपा, मराठवाड़ा में शिवसेना का राज था. इस बार नरेंद्र मोदी की सभा से अधिक शरद पवार, उद्धव ठाकरे की सभा को प्रतिसाद मिला. पूरे राज्य में महायुति के लिये अच्छा वातावरण रहा. 1995 के बाद

आश्चर्यजनक महायुति को जीत मिली है, इसका ठीकरा ईवीएम पर फोड़ा गया, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने ईवीएम की विश्वसनीयता को दर्शाया, लेकिन ईवीएम में गड़बड़ी है, यह कोई भी बता नहीं सका. महायुति सरकार ने इस चुनाव में जिन मुद्दों को प्राथमिकता दी थी. वह इस प्रकार रही. बेरोजगारी, किसान समस्या, विकास कार्य के लिये महायुति योग्य पर्याय है, ऐसा मतदाता मानने लगे थे. जबकि आघाड़ी में इन विषयों को लेकर नेताओं में एक मत नहीं था. शिवसेना व राकांपा में विभाजन को लेकर राहुल नार्वेकर ने कई टिप्पणियां कीं. जब उन्हें विधान परिषद का सभापति बनाया गया तो कांग्रेस और राकांपा के विधायक उन्हें बधाई देने आगे रहे. केवल उद्धव ठाकरे की सेना ने चुनाव पर बहिष्कार डाला था. इस चुनाव के बाद जहां शिवसेना आज भी अपनी भूमिका पर कायम है, वहीं कांग्रेस और राकांपा शरद पवार गुट ने नरमी बरती है. लोकसभा में जब वन नेशन वन इलेक्शन का प्रस्ताव रखा गया, तो कांग्रेस ने उसका विरोध किया और शरद पवार की राकांपा ने मोदी सरकार का समर्थन किया. आघाड़ी में इस प्रकार की भूमिका उनके लिये घातक साबित हुई. इस चुनाव में कई घोषणाएं भी की गईं. जब शिवसेना व राकांपा का विभाजन हुआ तो अदालत ने इसका फैसला रोककर रखा था. जैसे ही चुनाव की घोषणा की तैयारी हुई तब अजीत पवार और एकनाथ शिंदे के दल को मान्यता दी गयी. हालांकि इस बात को लेकर आघाड़ी के नेताओं ने मतदाता के मन में कटुता निर्माण करने की कोशिश की, जो असफल रही.

मतदाता हमेशा चुनाव में मुख्यमंत्री से अधिक विधायक के चेहरे को देखते हैं, जो उनकी समस्या सुलझा सकता है उसे वोट देते हैं. कुल मतदाताओं के 18 फीसदी मतदाता पहले ही सुनिश्चित करते हैं कि, उन्हें किसे वोट देना है. यह मतदाता उम्मीदवार के लाभार्थी व पार्टी की विचारधारा को मानने वाले होते हैं. 30 फीसदी मतदाता चुनाव प्रचार के आधार पर अपना वोट तैयार करते हैं और शेष 46 प्रतिशत मतदाता अंतिम चरण में अपना फैसला लेते हैं. भाजपा ने इन्हीं अंतिम मतदाताओं को ध्यान में रखकर अपनी बाजी खेली. इस सरकार ने किसानों के लिये विविध योजनाएं लाईं, जिसका कई किसान लाभ ले रहे हैं. गांव की अर्थव्यवस्था फिलहाल सरकार की कल्याणकारी योजनाओं पर निर्भर है. जिसका फायदा महायुति को मिला है. अंत में लाडली बहन योजना जो महिलाओं के लिये रखी गयी थी, इसके माध्यम से 2.40 करोड़ महिला परिवारों का डेटा शासन को प्राप्त हुआ. उन्होंने इन महिला मतदाताओं के माध्यम से उन परिवारों पर लक्ष्य केंद्रित किया. यहां तक कि सत्ता में आने के बाद उन्हें 2100 रुपए देंगे यह लालच भी दिया गया. कहीं न कहीं यह लालच भी उनकी जीत का रहस्य है. हम हमेशा जातिय समीकरण को तोलते हैं. अगर इसकी बात की जाये तो आघाड़ी को अपर कास्ट का 25 व युति को 65, मराठा कुणबी का आघाड़ी को 32 व युति को 54, अन्य ओबीसी का आघाड़ी को 26, युति को 60, अनुसूचित जाति का आघाड़ी को 25 और युति को 34, आदिवासियों का आघाड़ी को 56 व युति को 39, मुस्लिम का आघाड़ी को 55 व युति को 22 तथा अन्य का आघाड़ी को 31 व युति को 51 प्रतिशत मतदान प्राप्त हुआ है. इसके आधार पर कहा जाए तो उच्चवर्ण, मराठा कुणबी, ओबीसी व अनुसूचित जाति संवर्ग ने युति को प्राथमिकता दी है. झारखंड के मुकाबले महाराष्ट्र चुनाव की तुलना की जाए तो राज्य में 660.18 करोड़ नकद, शराब, सोने के गहने, मतदाताओं को वितरित करने वाली वस्तुएं जब्त की गईं, जबकि झारखंड में यह आंकड़ा 198.20 करोड़ था. कुल मिलाकर देखा जाए तो देश में महायुति की सरकार बनने के लिये कहीं न कहीं आघाड़ी की कई कमजोरियां फायदेमंद साबित हुई हैं, इस बात को उन्होंने व्यक्त किया.

कार्यक्रम का संचालन प्रा. गोविंद तिरमनवार तथा आभार डॉ. पी. आर. जाधव ने माना. प्रस्तावना प्राचार्य डॉ. विजय दरने ने रखी. अतिथि परिचय अविनाश दूधे ने दिया.

कार्मिक निधि बैंक मामले की जांच पुनः शुरू

300 से अधिक ग्राहकों के साथ की थी धोखाधड़ी

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अमरावती, 22 दिसंबर - कार्मिक बैंक मामले की पुनः जांच शुरू हो गई है, जिसमें अमरावती में 300 से अधिक छोटे व्यापारियों के साथ धोखाधड़ी की गई थी. इस मामले की जांच पिछले डेढ़ साल से बंद थी, इसलिए सांसद बलवंत वानखड़े ने सीधे पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखा. तद्नुसार, आयुक्त ने गाड़गेनगर पुलिस को तत्काल जांच कर आरोप पत्र दाखिल करने का निर्देश दिया है.

सांसद बलवंत वानखड़े के पत्र की पुलिस आयुक्त ने ली दखल

उल्लेखनीय है कि, संभाजीनगर स्थित कार्मिक निधि बैंक के निदेशक संतोष सरदार और दो अन्य लोगों ने यहां एक शाखा शुरू की थी. इस बैंक में निवेश करने के लिए छोटे व्यापारियों को जानबूझ कर विभिन्न प्रोत्साहन दिए गए. बैंक ने उनसे कहा था कि, आपके आज के छोटे निवेश को भविष्य में बड़ा निवेश बनाने में आपकी मदद करेगा. संतोष सरदार और उनके साथियों ने आश्वासन दिया था कि, छह महीने में जो रकम आप जमा करेंगे, उसके आधार पर आपको बड़ा लोन दिया जाएगा. लेकिन हकीकत में ऋण तो नहीं दिया गया, बल्कि बैंक ने सब्जी, बिस्कुट और फल बेचने वाले छोटे व्यापारियों द्वारा निवेश की गई राशि भी छह महीने बाद लौटाने से इनकार कर दिया. जब दबाव बढ़ा तो संतोष सरदार और उसके साथियों ने बैंक को बंद कर दिया और अमरावती से भाग गए. इस संबंध में जगदीश कन्हैयालाल श्रीवास व अन्य व्यापारियों ने 5 जुलाई 2023 को शिकायत दर्ज कराई थी. हालांकि, आरोपी अभी भी फरार हैं क्योंकि पुलिस ने जांच में तेजी नहीं लाई है. इस बीच निवेशकों ने बार-बार पुलिस थाने का दरवाजा खटखटाया. इतना ही नहीं, उन्होंने संभाजीनगर जाकर संतोष सरदार और उसके साथियों का पता लगाने की कोशिश भी की. हालांकि, वह वहां से भी भाग गया था. इसलिए, धोखा खाए हुए सभी लोगों ने सांसद बलवंत वानखड़े से मुलाकात की और उनसे न्याय की मांग की. तदनुसार, पुलिस ने अब फिर से जांच शुरू कर दी है.

आर्थिक अपराध शाखा ने बयान दर्ज किया

पुलिस आयुक्त के आदेश के बाद आर्थिक अपराध शाखा के एएसआई किशोर आगले ने जगदीश प्रसाद श्रीवास और अन्य शिकायतकर्ताओं के बयान दोबारा दर्ज किए. इससे पहले इस मामले की जांच गाड़गेनगर पुलिस अधिकारी पंकज ढोके को सौंपी गई थी, लेकिन उनके स्थानांतरण के बाद भी मामला अनसुलझा ही रहा. आगले ने कहा कि, अब पुलिस आयुक्त के आदेश पर गाड़गेनगर थाने के एक अन्य अधिकारी मामले की फिर से जांच करेंगे और जल्द ही आरोप पत्र दाखिल करेंगे.

जुलेखाबी का इंतकाल, अंत्येष्टि आज

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार
दर्यापुर, 22 दिसंबर - दर्यापुर तहसील कांग्रेस अल्पसंख्यक सेल तहसील अध्यक्ष सैयद रफीक नरदोळा की मां जुलेखाबी (85) का अल्प बीमारी से निधन हो गया. उनका जनाजा सोमवार, 23 दिसंबर को सुबह 10 बजे निवासस्थान नरदोळा, दर्यापुर से निकलेगा. यह जानकारी असलम मंचूरी ने दी.

भीमराव भागवत का निधन

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार
टाकरखेड़ा शंभु, 22 दिसंबर - स्थानीय सेवानिवृत्त शिक्षक भीमराव किसनराव भागवत (86) का 19 दिसंबर को निधन हो गया. वे अपने पीछे पत्नी, 3 बेटे, 2 बेटियां, नाती-पोती सहित भरा पूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं.

नरेंद्र विंचुरकर का निधन

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अमरावती, 22 दिसंबर - जिला नियोजन के पूर्व सदस्य, विंचुरकर ज्वेलर्स के संचालक, गाड़गे नगर निवासी नरेंद्र उर्फ बाळासाहब विंचुरकर (58) का अल्प बीमारी से निधन हो गया. उनके पीछे पत्नी,

मोहम्मद साबिर टिनमेकर का इंतकाल अंत्येष्टि आज

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार
आर्वी, 22 दिसंबर - शायर

अफजल दिवा के भाई तथा शाहरुख और तौसीफ (सोना फेब्रिकेशन) के पिता मोहम्मद साबिर मोहम्मद इस्माइल टिनमेकर (62) का हृदयाघात के चलते निधन हो गया. उनका जनाजा सोमवार, 23 दिसंबर को सुबह 10 बजे साईनगर स्थित निवासस्थान से निकल कर मुस्लिम कब्रिस्तान में सुपुर्द ए खाक किया जाएगा. वे अपने पीछे 2 पुत्र, 1 पुत्री सहित भरा पूरा परिवार शोकाकुल छोड़ गये हैं.पुत्र शुभम व तेजस सहित शोकाकुल परिवार है.

संतरा उत्पादकों की कार्यशाला आज

वरुड़-तहसील के सभी संतरा उत्पादक किसानों हेतु 23 दिसंबर को पीडीकेवी, अकोला अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन माधवराव काठीवाले सभागृह में किया गया है.

दो गुटों में सशस्त्र झड़प, सेना का जवान घायल

दो दिनों की छुट्टी पर आया था घर, समाधान नगर में हुई वारदात

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अमरावती, 22 दिसंबर - कोतवाली पुलिस थाना अंतर्गत आने वाले समाधान नगर में दो गुटों द्वारा एक-दूसरे पर सशस्त्र हमला किए जाने से खलबली मच गई थी. इस हमले में एक परिवार के दो पुरुषों सहित एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई. वहीं दूसरे गुट में शामिल सेना के जवान के सिर पर डंडा मारने से उसकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है. सेना का यह जवान दो दिनों की छुट्टी पर घर आया हुआ था. जवान का उपचार निजी अस्पताल में चल रहा है. एक गुट के घायलों में भावेश राजेंद्र धाकडे (26), एक महिला, महिला का दामाद, विजय उजागरे सभी समाधान नगरवासी शामिल हैं. वहीं दूसरे गुट से घायल में सेना के जवान प्रफुल्ल रामदास मोहोड (31, समाधान नगर) है.

प्राप्त जानकारी अनुसार, समाधान नगर में जख्मी भावेश धाकडे का परिसर में अमन गायकवाड के साथ विवाद हुआ. भावेश धाकडे द्वारा कोतवाली पुलिस को दिए बयान के अनुसार विवाद के बाद अमन गायकवाड ने अरूण गायकवाड, उदय गायकवाड, गोकुल गायकवाड, रत्नदीप गायकवाड और भारतीय सेना में जवान प्रफुल्ल मोहोड ने भावेश के घर में जाकर उसके साथ उसकी मां व दामाद विजय उजागरे पर चाकू से हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया. घटना के बाद परिसर के लोगों ने तत्काल भावेश व उसकी मां और दामाद विजय उजागरे को इर्विन अस्पताल में भर्ती किया. वहीं गायकवाड परिवार ने जख्मी जवान प्रफुल्ल मोहोड को कोतवाली पुलिस थाना अंतर्गत आने वाले एक निजी अस्पताल में भर्ती किया. प्रफुल्ल मोहोड ने कोतवाली पुलिस को दिए बयान में बताया कि, वह दो दिन की छुट्टी पर घर आया था. 22 दिसंबर की दोपहर को वह घर में सो रहा था, तभी बाहर से आवाज आई. तब प्रफुल्ल की पत्नी अपने छोटे बच्चे को लेकर क्या हुआ यह देखने के लिए बाहर गई. आवाज तेज होने के चलते प्रफुल्ल भी घर से बाहर आया तो उसके सिर पर परिसर में हाल ही में रहने आए भावेश उर्फ लाला ने पीछे से डंडे से वार कर उसे घायल कर दिया. प्रफुल्ल ने अपने बयान में कहा कि, भावेश उर्फ लाला गुजरात के अहमदाबाद शहर में पुलिस रिकार्ड में फरार आरोपी है और कई महीनों से समाधान नगर में रहकर रंगबाजी करता है. खबर लिखे जाने तक कोतवाली पुलिस थाने में अपराध दर्ज करने की प्रक्रिया जारी थी.

68 वर्ष के पति और 66 वर्षीय पत्नी ने मांगा था तलाक

लोक अदालत ने बुजुर्गों की शादी को टूटने से बचाया

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अकोला, 22 दिसंबर - पारिवारिक विवादों के कारण पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते में दरार आने और विवाह टूटने की घटनाओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है. इस विवाद को सुलह-समझौते के जरिए सुलझाया जाना चाहिए. इसी प्रकार अकोला में 68 वर्षीय पति और 66 वर्षीय पत्नी ने आपसी विवाद के चलते तलाक के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया. लोक अदालत में समन्वय के माध्यम से उनका हृदय परिवर्तन करने से इस उम्र में उनका जीवन एक बार फिर खिल उठा है.

संसार में पति-पत्नी के बीच मतभेद होते रहते हैं. इससे उत्पन्न संघर्ष चरम पर पहुंचता है. दम्पति अपनी वैवाहिक समस्याओं के विवाद को न्यायालय में ले जाकर समाधान करते हैं. पारिवारिक विवादों के कारण तलाक लेने वालों में युवा और बुजुर्ग दम्पतियों की संख्या बड़ी है. अकोला में ऐसे ही एक मामले में एक बुजुर्ग दम्पति को पुनः एक साथ लाया गया.

पति की उम्र 68 वर्ष है, जबकि पत्नी की उम्र 66 वर्ष है. दोनों सेवानिवृत्त हैं. उनके दो बच्चे हैं. उनके एक बच्चे की भी शादी हो चुकी है. फिर भी, इस बुजुर्ग दंपत्ति के बीच पारिवारिक विवाद उत्पन्न होने लगे. जब बहस बढ़ती गई तो अंततः उन्होंने आपसी सहमति से तलाक लेने का फैसला किया. तद्नुसार, अकोला के पारिवारिक न्यायालय में तलाक का मामला दायर किया गया. मामला परामर्शदाता को भेजा गया. फिर भी पति-पत्नी इस उम्र में तलाक लेने पर अड़े रहे.

यह मामला दिसंबर में लोक अदालत में रखा गया था. लोक अदालत में पति-पत्नी के पुनर्मिलन पर जोर दिया गया. पैनल के सदस्यों, जजों, काउंसलर आदि ने पति-पत्नी को समझाने की कोशिश की. समन्वय के माध्यम से वे दोनों अपना मन बदलने में सफल रहे. तलाक के लिए सहमति लेकर अदालत आए बुजुर्ग दम्पति एक साथ नया जीवन शुरू करने के लिए खुशी-खुशी घर चले गए. लोक अदालत में उनके प्रयासों की बदौलत उनकी जिंदगी एक बार फिर खिल उठी है. पारिवारिक न्यायालय न्यायाधीश नंदा और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव योगेश पैठणकर ने पारिवारिक विवादों को लोक अदालत और मध्यस्थता केंद्रों में सुलझाने की अपील की है.

आईआईएमसी के निर्माण की सूचना एवं प्रसारण सचिव जाजू ने की समीक्षा

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार
अमरावती, 22 दिसंबर - केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन मानद विश्वविद्यालय और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन स्वायत्त निकाय भारतीय जनसंचार संस्थान (आईआईएमसी) के पश्चिमी क्षेत्रीय अमरावती केंद्र का निर्माण करीब 15 एकड़ भूमि पर किया जा रहा है. इसके लिए केंद्रीय लोक निर्माण विभाग-सीपीडब्ल्यूडी की वेबसाइट पर ई-टेंडर जारी किया गया है. ईटेंडर. सीपीडब्ल्यूडी. कॉम पर टेंडर आमंत्रित किए जा रहे हैं और टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है. निविदाएं प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 27 दिसंबर है. केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सचिव संजय जाजू ने रविवार, 22 दिसंबर को नागपुर में मीडिया एवं संचार क्षेत्र की इस शीर्ष संस्था के निर्माण टेंडर प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए देशभर और विदर्भ के ठेकेदारों से पहल करने की अपील की. पश्चिमी विदर्भ के अमरावती में 2012 में स्थापित आईआईएमसी के निर्माण के संबंध में उन्होंने केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, नागपुर के मुख्य अभियंता प्रदीप दीक्षित से निर्माण की समीक्षा ली तथा कार्यालय प्रमुखों के साथ बैठक भी की.

बुनियादी ढांचे का निर्माण को समय पर पूर्ण करने के निर्देश

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय और केंद्रीय संचार ब्यूरो के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए. इस अवसर पर उन्होंने आशा व्यक्त की कि आईआईएमसी के कुछ शैक्षणिक परिसरों का निर्माण शैक्षणिक वर्ष 2026-27 में पूरा हो जाएगा. उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि, 2012 में अमरावती शहर में स्थापित आईआईएमसी शीघ्र ही अपने स्थायी शैक्षणिक परिसर में कार्य करना शुरू कर देगा.

इस नए शैक्षणिक परिसर में प्रशासनिक और शैक्षणिक भवन के साथ-साथ पुरुष और महिला छात्रों के लिए छात्रावास, स्टाफ क्वार्टर और 200 सीटों वाला एक सभागार भी शामिल होगा. आईआईएमसी के देश भर में पांच क्षेत्रीय केंद्र हैं जो अंग्रेजी, हिंदी और स्थानीय भाषाओं में पत्रकारिता पाठ्यक्रम चलाते हैं. महाराष्ट्र में अमरावती, ओडिशा में ढेंकनाल, मिजोरम में आइजोल, जम्मू और कश्मीर में जम्मू और केरल में कोट्टायम वर्तमान में संयुक्त रूप से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चला रहे हैं.

इस समीक्षा बैठक में आकाशवाणी नागपुर के उप महानिदेशक रमेश घरडे, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग- नागपुर के मुख्य अभियंता प्रदीप दीक्षित, आईआईएमसी अमरावती के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजेश कुशवाह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे.